महादेवी वर्मा

QF89T6

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था । उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई । प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयत्न किए । सन् 1987 में उनका देहांत हो गया ।

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में एक थीं । 'नीहार', 'रश्मि', 'यामा', 'दीपशिखा' उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । कविता के साथ-साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं, जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं । 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी', 'शृंखला की कड़ियाँ' उनकी महत्त्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं । महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी, भारत भारती एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया । भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया ।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना की पृष्ठभूमि में एक ओर आजादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है । यही कारण है कि उनके काव्य में जागरण की चेतना के साथ स्वतंत्रता की कामना की अभिव्यक्ति है और दुख की अनुभूति के साथ करुणा बोध भी । दूसरे छायावादी कवियों की तरह महादेवी वर्मा के प्रगीतों में भक्तिकाल के गीतों की प्रतिध्वनि है और लोकगीतों की अनुगूँज भी, किंतु इन दोनों के साथ उनके गीतों में आधुनिक बौद्धिक मानस के द्वंद्वों की अभिव्यक्ति ही प्रमुख है ।

महादेवी वर्मा के गीत अपने विशिष्ट रचाव और संगीतात्मकता के कारण अत्यंत आकर्षक हैं । उनमें लाक्षणिकता, चित्रमयता और बिंबधर्मिता है । महादेवी ने नए बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से प्रगीतों की अभिव्यक्ति को नया रूप दिया । उनकी काव्यभाषा प्रायः तत्सम शब्दों से निर्मित है ।

'मैं नीर भरी दुख की बदली' महादेवी के कविता संग्रह 'यामा' से संकलित है । कवयित्री के लिए व्यक्तिगत अभावों से पैदा होने वाला दुख इतना मूल्यवान और स्पृहणीय हो जाता है कि वे उसकी निरंतरता की कामना करती हैं और अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती हैं । बदली जल से भरी होती है । बदली का जल अपने लिए नहीं होता, सृष्टि के लिए होता है । वह तप्त विश्व को नहलाती है । बदली विश्व के लिए जल लेकर आती है और पूरे आकाश में छा जाती है । लगता है पूरा आकाश उसका अपना है, किंतु जल बरसाकर उसका समूचा अस्तित्व समाप्त हो जाता है । उसी तरह करुणाशील व्यक्ति भी संसार में करुणा का जल लेकर आता है और उसे संतप्त हृदय पर बरसाता है । उसका अपना कोई निजी सुख-दुख नहीं होता । वह तो दूसरों के सुख-दुख में खुद को शामिल कर अपने को बाँटता है । नभ में उसका अपना कोई कोना भले न हो, किंतु जहाँ कहीं हरीतिमा का उल्लास और सौंदर्य है, वह वहाँ मौजूद है, व्याप्त है । इस कविता में ध्वनित दुख या करुणा की यही दिशा है ।

मैं नीर भरी दुख की बदली

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली !

मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली !

मैं क्षितिज-भृकुटी पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली !

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली !

विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

अभ्यास

कविता के साथ

1. महादेवी अपने को 'नीर भरी दुख की बदली' क्यों कहती हैं ?
2. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें -

   (क) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
   चिंता का भार बनी अविरल,
   रज-कण पर जल-कण हो बरसी
   नव-जीवन अंकुर बन निकली !

   (ख) सुधि मेरे आगम की जग में
   सुख की सिहरन हो अंत खिली !
3. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है ?
4. कवयित्री किसे मलिन नहीं करने की बात करती हैं ?
5. सप्रसंग व्याख्या करें -

   'विस्तृत नभ का कोई कोना
   मेरा न कभी अपना होना
   परिचय इतना इतिहास यही
   उमड़ी कल थी मिट आज चली ।
6. 'नयनों में दीपक से जलते' में 'दीपक' का क्या अभिप्राय है ?
7. कविता के अनुसार कवयित्री अपना परिचय किस रूप में दे रही हैं ?
8. 'मेरा न कभी अपना होना' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है ?
9. कवयित्री ने अपने जीवन में आँसू को अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन माना है । कैसे ? स्पष्ट कीजिए ।
10. इस कविता में 'दुख' और 'आँसू' कहाँ-कहाँ, किन-किन रूपों में आते हैं ? उनकी सार्थकता क्या है ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. इस कविता से मिलते-जुलते भावों की अन्य कविताओं का संग्रह करें ।
2. महादेवी वर्मा की कविता व्यक्तिगत सुख-दुख की सीमा से ऊपर उठकर पूरे विश्व के सुख-दुख को अपने में समाहित कर लेती है, इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
3. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' भी कहा जाता है । इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

4. महादेवी कविता के अलावा चित्रांकन भी करती थीं, उन्होंने उत्कृष्ट गद्य भी लिखा है । उनके कुछ चित्र और गद्य रचनाएँ एकत्र करें ।

भाषा की बात

1. प्रस्तुत कविता से तत्सम शब्दों को छाँटिए और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग कीजिए ।
2. निम्नांकित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए –
   नयन, संगीत, निर्झरिणी, निस्पंद
3. निम्नांकित शब्दों के वाक्य बनाते हुए लिंग-निर्णय करें -
   सुख, दीपक, चिंता, पथ, श्वास
4. निम्नांकित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची बताएँ -
   नभ, विश्व, नव, नयन
5. निम्नांकित शब्दों के विलोम रूप लिखें –
   जीवन, सुख, विस्तृत, अपना, आज

शब्द निधि

नीर	:	जल (यहाँ आँसू के अर्थ में)	मलय-बयार	:	दक्षिणी पवन
बदली	:	बादल	क्षितिज-भृकुटी	:	दिगंत रूपी भौहें
स्पंदन	:	कंपन	धूमिल	:	मलिन
क्रंदन	:	रोना, रुदन	अविरल	:	निरंतर, लगातार
आहत	:	घायल	रज-कण	:	धूलि कण
निर्झरिणी	:	झरना का छोटा रूप	सुधि	:	याद, स्मृति
स्वप्न-पराग	:	स्वप्न रूपी पुष्प की धूलि	आगम	:	आना
दुकूल	:	दुपट्टा